भूमिका-

दुनिया की सबसे सरल प्रेम कहानी होने के बावजूद यह कभी पुरानी न पड़ने वाली कहानी भी है। देवदास सरीखा किरदार कभी न भूलने वाले किरदारों में शामिल हो गया है। देवदास के किरदार की खासियत यह है कि उसमें हर प्रेमी को अपना अक्स दिखता है। इसी वजह से 1917 में प्रकाशित शरतचंद के इस उपन्यास को पीढ़ी-दर-पीढ़ी पढ़ा गया है। शायद यह दुनिया की इकलौती किताब होगी, जिस पर कई बार कामयाब फिल्में बन चुकी हैं। अब तक इस कहानी पर विभिन्न भाषाओं में सोलह फिल्में बन चुकी हैं| सत्रहवीं फिल्म सुधीर मिश्रा जी बना रहे हैं जिसकी शूटिंग चल रही है| भारत में अब तक सभी महत्वपूर्ण भाषाओं में कई बार यह फिल्म बन चुकी है हर फिल्म में वही ताजगी नजर आती है| हिन्दी में बॉलीवुड के मशहूर निर्देशकों ने इस कहानी पर देवदास नाम से ही फिल्म बनाया तथा बॉक्स ऑफिस पर रिकॉर्ड तोड़ कमाई की | हर निर्देशक ने इस कहानी मे अपने हिसाब से फेर बदल भी किया तथा नए रूप मे प्रस्तुत करने की कोशिश की | उनमे महत्वपूर्ण नाम है पी. सी. बरुआ, बिमल रॉय, संजय लीला भंसाली तथा अनुराग कश्यप | यहाँ पर देखने की जरूरत है की सारे फिल्मकार एक ही कहानी को किस तरह का जामा पहना रहे है, किस तरह से सब देवदास की जीवनशैली, देश, काल, वातावरण एक दूसरे से अलग है सारे निर्देशकों अपने देवदास और पारो को नया व्यक्तित्व दिया है| हम देखते हैं की इस कहानी की एक चीज बदल देने से पूरी कहानी नयी लगाने लगती है |

किसी भी शोध के लिए सबसे जरूरी यह है की वह विषय समाज या उस विधा के विकास में कितना योगदान दे सकता है| उसकी महत्ता को ही देखकर उस विषय को महत्व दिया जाता है| इस विषय की महत्ता यह है कि हम इसके द्वारा यह जानने की कोशिश किया गया है कि आखिर ऐसी क्या बात इस कहानी में है जो की नए नए निर्देशकों के आकर्षण का केंद्र बना हुआ है| इसमे इतनी संभावनाए कैसे हैं कि 16 बार फिल्म बनने के बाद भी सत्रहवीं बार फिल्म उसी नाम से बन रही है

तथा अभी कितनी तरह की संभावनाए और हैं अभी कितनी फिल्में और बन सकती है| क्या इसी तरह अन्य साहित्यिक कृतिओं पर फिल्म बनाई जा सकती है यदि नहीं बनाई जा सकती तो क्यों नहीं उसमें कितने बदलाव की जरूरत होगी | तथा किसी कहानी को फिल्मी रूप देने मे किस तरह के बदलाव की जरूरत पड़ती है| हमें यहाँ देखना पड़ेगा कि एक कालजयी कृति किस तरह से समय के साथ समंजस्य बनाए रख सकती है| यही हमारे शोध का विषय है|

फिल्म अभी बहुत पुरानी विधा नहीं है इसको शुरू हुए अभी 100 साल हुए है | अब तक इसके तकनीक के विकास को लेकर काम हो रहा है | फिल्म की शुरुआत ही व्यवसाय के साथ हुई | लोगों ने फिल्म को मनोरंजन के तौर पर लिया | लेकिन फिल्म के समाज पर प्रभाव को देखकर कुछ फ़िल्मकारों ने सामाजिक मुद्दों पर फिल्में बनाई | हालांकि यह सिलसिला चालीस के दशक में शुरू हो चुका था | लेकिन यह अपने चरम पर 60 -70 के दशक में पहुंचा | सिनेमा का सबसे बड़ा दुर्भाग्य यह है की जो हमारा बौद्धिक वर्ग है वह सिनेमा को स्वीकार नहीं किया | जिससे इस पर शोध हो सके इस तरह की बात नहीं बन पायी | जो कुछ लिखा भी गया वह एक सूचनात्मक था | वह चाहे अखबारों में हो या पत्र पत्रिकाओं में | लेकिन जैसे जैसे सूचनाक्रांति का विकास हो रहा है लोगों का ध्यान इस पर जा रहा है | लोग चाहे फेसबुक पर ही लिखें लेकिन फिल्म देखने के बाद उनको फिल्म कैसी लगी इसके बारे मे कुछ लोग लिखते हैं | कुछ फिल्म समीक्षक भी हैं जो आने वाली फिल्मों के बारे में अक्सर लिखते रहते हैं| चूंकि अब मीडिया और फिल्म को अब विषय के रूप मे स्वीकार कर लिया गया है तो कुछ शोध होने शुरू हुए हैं | लेकिन वो भी अभी उस स्तर का नहीं हो पा रहा है |

मेरे शोध का विषय है “हिंदी सिनेमा में कितने देवदास ?” मैंने अपने शोध में देवदास की कहानी पर बनी फिल्मों का विश्लेषणात्मक अध्ययन किया है | हालांकि देवदास पर कई किताबें भी लिखी जा चुकी हैं |लेकिन वे सारी किताबें देखा जाए तो सूचनात्मक और इतिहास परक हैं | उसमें बताया गया है की किस तरह से देवदास उपन्यास लिखा गया या किस तरह से उस पर फिल्में बनी |

भूमिका

इस शोध के माध्यम से यह दिखाने की कोशिश किया गया है कि देवदास उपन्यास को लेकर जितनी भी फिल्में बनी हैं और जिस काल में बनी हैं उस काल में सामाजिक ढांचा क्या था, सामाजिक अनुशासन क्या था तथा उस काल में देवदास का स्वरूप क्या था | हर काल के निर्देशकों ने उपन्यास के किस अंश को ज्यादा ध्यान दिया है किस अंश को छोड़ दिया है | हम यह भी जानने कि कोशिश किया गया है कि निर्देशक किस तरह से देवदास में उस समय के वर्तमान समय में प्रासंगिक कथानक को समायोजित करता है | इसमें हम जानने कि कोशिश किया गया है कि ऐसे कौन से तत्व हैं जिनके परिवर्तन से कोई भी कथा पुनः नयी हो जाती है | देवदास एक ऐसा उपन्यास है जिस पर अभी तक सबसे ज्यादा फिल्में बनी हैं |

इस शोध मे तुलनात्मक शोध प्रविधि का प्रयोग किया गया है | कुछ बिन्दुओं पर विश्लेषणात्मक शोध प्रविधि भी प्रयोग की जा सकती है। इसके अतिरिक्त व्याख्यात्मक शोध प्रविधि और दस्तावेजी शोध पद्धति का भी प्रयोग किया गया है | क्योंकि यह विषय नया है इसमें अभी कोई खास शोध हुआ नहीं है। वैसे भी फिल्मों के लिए अभी कोई खास शोध प्रविधि विकसित नहीं की जा सकी है इसलिए सामाजिक विज्ञान और मानविकी के शोध प्रविधि को प्रयोग करके अपने उद्देश्यों कि पूर्ति का प्रयास किया गया है।